Vol III Issue II August 2013

Impact Factor : 1. 2018

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 1. 2018

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts

ISSN 2231-5063
Volume-3, Issue-2, August-2013

रमेश सोबती के काव्य की विशिष्ट उपलब्धियां

यशवीर दहिया
पी–एच.डी. शोधार्थी(हिन्दी)
द्रविडियन विश्वविद्यालय, कुप्पम, (आं.प्र.)

सारांश : श्री रमेश सोबती के काव्य में मानवीय मूल्यों की संवेदना, परिवेशजन्य टकराहट तथा सहज सम्प्रेषणीयता की अनुभूति स्पष्टतः देखी जा सकती है। कविताओं में एक अन्तर्यात्रा जैसा प्रभाव दिखाई देता है। यह एक कोण से अनेक कोणों की अन्तर्यात्रा करते हैं जो काव्य में प्रमुखतः देखी जा सकती है। कई बार कवि के मन पर मृत्युबोध हावी होता दिखाई देता है, परन्तु इन सबके बावजूद, कहीं कविताओं के भीतर मानवता को जगाने की उम्मीद है, तो कहीं 'मुझे स्वयं होना है' का आत्म विश्वास है। बुद्धि प्रधान युग में भावों, संश्लिष्ट, जटिलता को सहज स्वाभाविक भी माना जा सकता है, परन्तु इसमें एक स्वतः सम्भूत कलात्मक संयम भी अपेक्षित है, जिसके बिना कविता अनर्गल प्रलाप प्रतीत होने लगती है। यह उसी संयम को प्राप्त करने की राह पर गतिमान है। काव्य की विशिष्ट उपलब्धियों से सम्बन्धित शीर्षकों का वर्णन आगे किया जा रहा है। काव्य और शिल्प की दृष्टि से देखा जाए तो स्पष्ट दिखाई देता है कि आधुनिक हिन्दी कविता में रचनाकार का विशेष स्थान है।

परिभाषिक शब्द – मानवीय मूल्यों की संवेदना।

प्रस्तवाना :

काव्य में सामाजिक सरोकारः

रचनाकार काव्य के माध्यम से कहीं समाज को नए मार्ग दिखाते हैं, तो कहीं समाज के लिए आह्वान करते नजर आते हैं। यह सोचते हैं कि जब तक समाज उन्नति नहीं करेगा, तो देश भी उन्नति नहीं कर सकता। इसी सन्दर्भ में ''सम्बद्ध सामाजिक सरोकार का विमर्श किया जाता है। मानवीय आचार–विचार, रीति–रिवाज, आस्था, स्नेह, सम्बन्ध, द्वन्द्व, संघर्ष ही समाज को साकार करते हैं''1 मनुष्य में समाज सेवा के गुण ईश्वर प्रदत्त होते हैं, यह संस्कार ईश्वर किसी–किसी को देता है। सामाज से वही व्यक्ति लगाव रख सकता है, जो सामाजिक हो। जिस साहित्यकार की समाज के प्रति पीड़ा होती है, वही काव्य के माध्यम से अपनी पीड़ा को व्यक्त करता है। कवि समाज को जागृत करने से पहले स्वयं की भावनाओं को जगाते हुए कहता है –

''ओ मेरे सोये हुए पंखो
उठो
लिपट जाओ संग मेरे
और मेरे बिखरे हुए पंखो
उड़ो
घेर ले मुझको
तुम अपनी शक्तियों से।''[2]

समाज में फैली कुरीतियों से तथा लोगों की बीमार मानसिकता से यह बहुत दुखी हैं। जब यह समाज में कन्या भ्रूण हत्या को देखते हैं तो परेशान हो जाते हैं, क्योंकि यह एक अपराध है। अगर समाज में ऐसा ही होता रहा तो समाज में लड़कियों की संख्या बहुत कम हो जाएगी। इससे रचनाकार बहुत दुखी है। कन्या भ्रूण हत्या समाज के लिए बहुत बड़ा खतरा है। अजन्मी बेटी की तरफ से कविता सामाजिक मानसिकता बदलने के लिए प्रभावी संदेश देती हैं –

''यदि मैं नारायणी हूँ
तो मुझे
जन्म से पहले मत मारना
क्योंकि मैं कल्याणी हूँ।
युगों–युगों का अनुभव लेकर जन्मूंगी।''[3]

''रचनाकार अपने समय और परिवेश का साक्षी है, क्योंकि यह यहां से कथ्य एवं वस्तु को ग्रहण करता है। श्री रमेश सोबती के काव्य में भी भिन्न–भिन्न कालों की प्रतिध्वनि सुनाई देती है, जिसमें आतंक का काल प्रमुख है। पंजाब की धरती जब बुरी तरह जल रही थी, तब लोगों का सुख–चैन–परिहास, सब कुछ लुप्त हो गया था।''4 'व्योम–सिद्ध' कविता में अपनी पीड़ा को इस प्रकार व्यक्त की है –

''कभी–कभी रात के पिछले पहर
किसी विस्मित आलोक से
जाग उठता हूँ
इसकी भयानक रोशनी
मेरी आँखो से नींद
गुम कर देती है।''[5]

अतः कहा जा सकता है कि कवि ने सामाजिक परिवेश तथा समाज की पीड़ा को काव्य का माध्यम बनाया है। काव्य के माध्यम से यह समाज को जगह–जगह पर मार्गदर्शन करते दिखाई देते हैं। इन सभी सरोकारों से स्पष्ट होता है कि समाज की पीड़ा को यह अपनी पीड़ा समझते हैं।

राजनीतिक सजगता से परिपूर्णः

श्री रमेश सोबती राजनीति के प्रति एक सजग सिपाही हैं, क्योंकि जब राजनेता जनता का शोषण, अत्याचार, अनाचार और भेदभाव करते हैं, तब यह लोगों को जागरूक करते नजर आते हैं। यह सोचते हैं कि देश की राजनीति में भ्रष्टाचार फैल चुका है, अब आम नागरिक का भला नहीं हो सकता, तब यह बहुत दुखी हो जाते हैं। जब तक समाज अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नहीं होगा, तब तब इस भोली–भाली जनता का नेता लोग ऐसे ही शोषण करते रहेंगे। ऐसे में कवि लोगों से आह्वान करता नजर आता है कि किसी का अन्याय सहन मत करो। क्योंकि सबसे बड़ा अपराध किसी का अन्याय सहन करना है। पहले हमारे देश का अंग्रेजों का अधिकार था, उन्होंने जनता का शोषण किया, लेकिन अब यह राजनेता जनता का शोषण करते नज़र आते हैं।

नेताओं के भ्रष्ट आचरण को देखकर रचनाकार परेशान हो जाते हैं। वर्तमान राजनीति में अब भी अंग्रेजो की विचारधारा का पूरा प्रभाव दिखाई देता है। आज भी अंग्रेजों की तरह शासन किया जा रहा है। इस भ्रष्ट शासन तंत्र की वजह से सामाजिक जीवन में भी गिरावट आई है। भारत को आजाद हुए काफी वर्ष बीत गए हैं, लेकिन इतिहास पर पन्नों पर ही आजाद हुए हैं। जनता की जो स्थिति पहले थी वही आज भी है। आज भी हम गुलामी की मानसिकता में जीवन व्यतीत कर रहे हैं। कवि इस गुलामी से छुटकारा पाना चाहते हैं। यह एक कविता के माध्यम से कहते हैं –

''मुझे अच्छा नहीं लगता, तुम्हारी नीयत
ईसा– युग के उन शासकों की –सी
लगती है,
जिन्होंने उसे कांटो का ताज पहनाकर
कॉस पर लटकाया और जलील किया था।''[6]

''राजनीति के इस प्रकार के स्वरूप के लिए राजनीतिज्ञों के भ्रष्टचरित्रों का भी कम योगदान नहीं। क्योंकि वोट की राजनीति ही आजकल के नेताओं का मुख्य लक्ष्य है। राष्ट्र की एकता एवं अमन शान्ति आज के राजनेताओं

के चिन्तन का विषय नहीं रह गया है। आजकल के नेता राष्ट्र शब्द का अर्थ जानने का प्रयास नहीं करते। केवल अपने भाषणों में राष्ट्रीयता, साम्प्रदायिक एकता आदि शब्दों का मात्र प्रयोग कर देने से ना तो राष्ट्रीय भावना का विकास संभव है और ना ही इससे शान्ति स्थापित हो सकती।''7 कवि राजनेताओं पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं –

''त्याग अनुशासन – मर्यादा
मांगते हैं –हमसे
स्वयं बेच देते हैं
अपना जमीर और इमान''[8]

अन्याय के विरूद्ध लड़ने की प्रार्थना करते हुए कवि कहते हैं कि इस देश के लोग आशावादी नहीं हैं। अगर आशावादी रहें तो देश में परिवर्तन हो सकता है। इस समय देश की जनता मंहगाई की मार से जूझ रही है। जब यह सभी इक्टठे होकर क्रांति करें तब इनका गुस्सा ज्वालामुखी की तरह फूट जाएगा झूठे वायदे करके सत्ता में बैठे लोगों को सत्ता से बाहर निकालने के लिए मजबूर कर देंगे। कवि कहते हैं कि मैं भी पीछे रहने वाला नहीं हूं, मैं भी काव्य रूपी रथ लेकर उनकी क्रान्ति में साथ दूंगा। यह कहते नजर आते हैं –

''राजनीति के
ये महारथी
चाहे मेरे सभी शस्त्र छीन लें,
मैं हारूंगा नहीं
मैं जानता हूँ।''[9]

अतः कहा जा सकता है कि भ्रष्ट राजनीति तंत्र को देखकर रचनाकार बहुत दुखी होते हैं। लोगों में राजनीतिक जागृति पैदा करने में यह सफल रहे हैं। जब राजनेता बाह्य आडम्बर से जनता को अपनी ओर आकर्षित करते हैं तब यह उनके बहकावे में नहीं आने की प्रेरणा देते हैं।

सांस्कृतिक मूल्यबोधः

संस्कृति को काव्य में वही स्थान देता है, जो भारतीय संस्कृति का पक्षधर होता है। इस धरती पर जब भी भारतीय संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया जाता है तो इसे बचाने के लिए कोई न कोई युग पुरूष अवतार रूप में अवश्य जन्म लेता है। भारतीय संस्कृति इतनी समृद्ध है कि दूसरे देशों के लोग भी इससे प्रभावित हैं और इसे अपनाने के लिए आतुर रहते हैं। इनका मानना है कि मैं जब भी मंदिर से उदास लौटता था, तो मेरी मां का दिया आशीर्वाद ही मेरे काम आता था, क्योंकि मेरी मां ने वह गाँव की गलियों से विदा करते हुए पोटली में बांध कर सिर पर रख दिया था, जैसे –

'' और अब तो संस्कारों के इस देश में
अपने नए शरीर को
पुराने कर्मों के ऐतिहासिक रथ पर रख
छोड़ दी हैं वल्गाएं,
निकला है मेरा रथ खोजता सूर्यपथ।''[10]

सांस्कृतिक मूल्य यह सिखाते हैं कि नारी जाति का सम्मान करो, उसका अपमान मत करो। माँ की कोख में पल रहा कन्या भ्रूण अपनी माता से विनती करता नजर आता है कि मुझे कन्या समझ कर हत्या न करवा देना। ऐसा करने से समाज तुम्हें माफ नहीं करेगा। अगर ऐसा करोगे तो गौरी, लक्ष्मी, सीता जैसी देवियां इस धरती पर अवतरित नहीं होंगी। काव्य की पंक्तियां यही प्रेरणा देती नजर आती हैं –

''सोच लो माँ
कहीं कोई बड़ी भूल
तुमसे न हो जाए,
मेरी किलकारियां अवश्य सुनना।''[11]

श्री रमेश सोबती सांस्कृतिक प्रसंगों एवं संदर्भों के माध्यम से वर्तमान युग बोध की गहन अनुभूति कराने में सफल रहे हैं।

फैंटेसी के विभिन्न आयामः

जब काव्य का अनुशीलन करते हैं तो कल्पनाओं के विभिन्न रूप सामने आते हैं। रचनाकार के पास विशेष काल्पनिक शक्ति है। ''यह फैंटेसी के माध्यम से वर्तमान परिवेश की भयानकता तथा मानव के अन्तर्द्वन्द्व में फंसकर जो दर्दनाक हालत होती है, इसी की अभिव्यक्ति अपने काव्य में की है। इस फैंटेसी के निर्माण के लिए कवि ने ऐसे शब्दों को घड़ा है, जो कविता में शुरू से लेकर अन्त तक रहस्यात्मक वातावरण बनाते हैं।''12 कल्पना का एक सुन्दर रूप इन पंक्तियों में देखा जा सकता है –

''और मैं चीखती रोशनी में
एक घूमती हुई गोलाई देखता हूं
कुछ क्षणों तक
मेरा – कुछ भी अस्तित्व
बाकी नहीं रहता
उस वक्त।''[13]

कई बार यह कल्पना लोक में खो जाते हैं, जो समय बीत रहा है उसकी कल्पना करके दुखी हो जाते हैं। मन कुछ अनुभूति करता है, फिर वही मार्मिक अनुभूति इन्हें परेशान कर देती है–

''तैरता हूं हवा में
पकड़ता हूं
भय के आकाश से कौतुहल और
भरी तितलियों के उड़ते पंख,
बचपन का सपनाई हरा रंग
बिखर जाता है।''[14]

कवि ने ऐसी फैंटेसियों की रचना भी की है, जिसमें समाज की पीड़ा, आंतकवाद, हिंसा से पीड़ित लोग तथा पूंजीवाद द्वारा शोषित वर्ग का सुन्दर चित्रण काव्य में उतारा है। ''वर्तमान जीवन की गुत्थियां बिल्कुल उस प्याज के छिलके की तरह हैं, जो पर्त दर पर्त खुलती हैं, तब हमारे जीवन अनुभव फिल्म–रील की तरह बदलते जाते हैं और व्यक्ति के सामने यथार्थपरक जीवन के सजीव चित्र प्रकट होने लगते हैं। ऐसे में वह निर्णय नहीं कर पाता कि जिस कटु यथार्थ से वह अभी–अभी गुजरा है, वह फैंटेसी या प्रत्यक्ष।''[15]

अंत मैं कहा जा सकता है कि काव्य में कवि ने सफल काल्पनिक उड़ान भरी है। जीवन के कटु अनुभवों को फैंटेसी के माध्यम से चित्रित किया है।

पौराणिक मिथकों का प्रयोगः

रचनाकार ने अपनी अधिकतर कविताओं में पौराणिक मिथकों का प्रयोग किया है। पौराणिक मिथकों से अभिप्राय – ''काल्पनिक कथाओं से है, जो मानव के विकास के साथ–साथ विकसित होकर आज भी मानव जीवन और उसके परिवेश को अभिव्यक्ति दे रही हैं।''16 पौराणिक मिथकों में निहित कथाएं पुराने जीवन, परिवेश से सम्बन्धित होने के साथ ही एक नवीन भाव बोध लिए हुए होती है। काव्य में महाभारतीय पौराणिक सन्दर्भ प्रमुखतः देखे जा सकते हैं। इन्हें चुनौती भी देनी आती है। 'पितामहः इच्छाशक्ति एक' में यह भीष्म पितामह के स्वर में अर्जुन को चुनौती देते हुए लिखते हैं –

''जब तक मैं जीवित हूँ
तुम युद्ध नहीं जीत सकते
मेरी मृत्यु
मेरी ही इच्छा से होगी
जाओ,
पहले मेरी इच्छा शक्ति को जीतो,
कृष्ण से दोबारा गीत सुनो
शायद कोई रास्ता निकल आए।''[17]

श्री रमेश सोबती अपनी अभिव्यक्ति द्वारा सफलता के उच्चतम शिखर पर पहुंचने के लिए ही मिथकों का प्रयोग करते हैं। इसके साथ ही यह स्पष्ट होता है कि मिथक की शक्ति और सामर्थ्य से अच्छी तरह परिचित हैं।

परम्परा और प्रयोग का सामजस्यः

काव्य में परम्परा और प्रयोग का निर्वहन स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। साहित्य को गति देने में परम्परा और प्रयोग की विशेष आवश्यकता होती है। ''परम्परा की दृष्टि अतीत पर केन्द्रित होती है, जबकि प्रयोग की दृष्टि भविष्य की ओर अग्रसर होती है। प्रयोग का परम्परा के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। यह अतीत के अनुभवों का संबल लेकर निरंतर आगे बढ़ने की शक्ति ग्रहण करता चलता है, क्योंकि अतीत का अनुभव भविष्य के लिए दृष्टि का द्वार खोलता है।''[18]

काव्य में पुरानी परम्पराओं और मान्यताओं को उचित स्थान दिया है। इसके साथ ही काव्य में परम्परा और प्रयोग का अनूठा सामजस्य देखने को मिलता हैं पुरानी परम्पराओं का निर्वहन करने की शक्ति भी है और काव्य में नए–नए प्रयोग करने के लिए दृष्टि भी है। पुराने समय में साहित्य लिखने की जो परम्परा थी, उस परम्परा से हट कर यह काव्य सृजन करते हैं। इसलिए साहित्य में नए–नए दृश्य स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। सही मायने में आधुनिक युग के प्रयोगों के कारण अतीत की परम्पराओं में ढूंढा जा सकता है, यह इसलिए क्योंकि अतीत वर्तमान की आधार भूमि है। रचनाकार ने वर्तमान समय को समझने के लिए अतीत

ISSN 2231-5063
Volume-3, Issue-2, August-2013

की ओर दृष्टिपात किया है –

''इतिहास का अर्थ
समझ आए तो कैसें?
आओ –
खेलकर रख दें,
यही
अपने–अपने रूमालों से
बांध ज्ञान और विवेक
और लौट चलें''[19]

निष्कर्ष:

निष्कर्ष स्वरूप यही कहा जा सकता है कि रमेश सोबती ने काव्य में सामाजिक सरोकारों से रूबरू करवाया है और काव्य में फैंटेसी के विविध रूप स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं। इसके साथ–साथ पौराणिक मिथकों का प्रयोग बहुतायत रूप से किया है। परम्परा और प्रयोग का समन्वय स्पष्ट रूप से झलकता है।

संदर्भ–संकेत:

1.कविवर, डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी, पृष्ठ – 35
2.आत्मा का एक पर्वत, पृष्ठ– 42
3.ठंडे महीनों की कुनकुनी धूप में, पृष्ठ– 14 और 15
4.रमेश सोबती का काव्य : वस्तु और शिल्प, पृष्ठ–68
5.अनुभव में उतरते हुए, पृष्ठ–07
6.मुक्ति की तलाश में, पृष्ठ–25
7.रमेश सोबती का काव्य : वस्तु और शिल्प, पृष्ठ–73
8.एक विवश मौन, पृष्ठ–26
9.समय के सूरज पर, पृष्ठ–7
10.मुक्ति की तलाश में पृष्ठ–31
11.ठण्डे महीनों की कुनकुनी धूप में, पृष्ठ–15
12.रमेश सोबती का काव्य : वस्तु और शिल्प, पृष्ठ–74
13.एक विवश मौन, पृष्ठ–74
14.ठण्डे महीनों की कुनकुनी धूप में, पृष्ठ–41
15.रमेश सोबती का काव्य : वस्तु और शिल्प, पृष्ठ–75
16.लक्ष्मी नारायण लाल के नाटकों में मिथक, पृष्ठ–9
17.एक विवश मौन, पृष्ठ–32
18.आधुनिक काव्य में परम्परा और प्रयोग, पृष्ठ–9
19.अनुभव में उतरते हुए, पृष्ठ–53

संदर्भ ग्रन्थों की सूची:

1.आत्मा का एक पर्वत, कविः रमेश सोबती, प्रकाशक–5230 आरोड़िया स्ट्रीट, पटियाला, प्रथम संस्करण 1976।
2.मुक्ति की तालश में, कवि–रमेश सोबती, प्रकाशक–5230 आरोड़िया स्ट्रीट, पटियाला, प्रथम संस्करण 1976।
3.आधुनिक हिन्दी काव्यः परम्परा और प्रयोग, लेखक गोपाल दत्त सारस्वत, प्रकाशक–सरस्वती प्रकाशन मन्दिर, इलाहाबाद।
4.अनुभव में उतरते हुए, कविः रमेश सोबती, प्रकाशक–आधुनिक किताब घर जालन्धर, प्रथम संस्करण 1999।
5.राजपाल हिन्दी शब्द–कोश, लेखकः डॉ. हरदेव बाहरी, प्रकाशक–राजपाल एंड सन्ज, कश्मीरी गेट, दिल्ली, पन्द्रहवां संस्करण 2000।
6.डॉ. हरमहेन्द्र सिंह बेदी, लेखक डॉ. राम सजन पांडेय, प्रकाशक–निर्मल पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2001 ।
7.एक विवश मौन, कविः रमेश सोबती, प्रकाशक–शाहीन प्रकाशन, आलमबाग, लखनऊ, प्रथम संस्करण 2002।
8.समय के सूरज पर, कविः रमेश सोबती, प्रकाशक–देवेश प्रकाशन, जमालपुर, लुधियाना, प्रथम संस्करण 2004।
9.लक्ष्मी नारायण 'लाल' की नाटकों मे मिथक, लेखिका–हरमिन्द्र कौर, प्रकाशक–लाहौर बुक शॉप, लुधियाना, प्रथम संस्करण–2004 ।
10.ठण्डे महीनों की कुनकुनी धूप में, कविः रमेश सोबती, प्रकाशक–शाहीन प्रकाशन, आलमबाग, लखनऊ, प्रथम संस्करण 2008।
11.रमेश सोबती का काव्यः वस्तु और शिल्प, लेखकः दविन्दर कौर, प्रकाशक–शाहीन प्रकाशन, आलमबाग, लखनऊ, प्रथम संस्करण 2008।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net